# भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

| | | |
|---|---|---|
| १ | प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य | महाराष्ट्र (मराठवाडा विभाग) |
| २ | योजना के प्रस्तावित परंपरा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रजी में) | वैदिक परंपरा<br>अथर्ववेद उपग्रंथ परियोजना |
| ३ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा से संबंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण | संस्कृत, मराठी |
| ४ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा से स्पष्ट रूप से संबंधित प्रतिनिधी ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें) | समुदाय/समूह : ब्राह्मण परिवार<br>प्रतिनिधी : श्री महेश गंगाधर जोशी,<br>मु. पो. हाळी – ४१३ ५१८<br>ता. उदगीर, जि. लातूर,<br>महाराष्ट्र |
| ५ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/ परंपरा के तत्वों की जीवंतता का विसरित भौगोलिक क्षेत्र जिनमें उनका अस्तित्व है / पहचान है | सकल भारत देश |
| ६ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा की पहचान एवं उसकी परिभाषा / उसका विवरण | मौखिक परंपरा : छात्र गुरुमुख से मंत्र सिखता है और उसे याद रखता है |
| ७ | कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा का रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दे | प्रचलित सद्य परिस्थिती में अथर्ववेद की मौखिक उपग्रंथ परंपरा खंडित हो चुकी है। इस परंपराको पुन: उज्ज्वलीत करने के लिए इस अमूल्य राशीका संवर्धन अत्यंत आवश्यक है। मानव प्रमाद वशात् यह वेद उपग्रंथ कंठस्थीकरण परंपरा लुप्तप्राय अवस्था में है। अत: इस मौखिक परंपरा को पुनरुज्जीवित करने हेतू अथर्ववेद उपग्रंथ परम्परासे अध्ययन अध्यापन करके इन ग्रंथों को पुनरुज्जीवीत किया जा सकता है। |

| | | |
|---|---|---|
| ८ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ती और अभ्यासी कौन हैं ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्त्व है इस परंपरा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पिढी को संचरण के निमित्त? अगर है तो वो कौन है और उनका दायित्त्व क्या है? | अथर्ववेद मौखिक परंपरा के अधिकारी और अभ्यासी व्यक्ती अथर्ववेदाचार्य श्रीधर शेष अडी हैं। इन्होंने इस परंपराको पुनर्जन्म दिया है। इनमें इनका अनन्यसाधारण दायित्त्व है। यै महानुभाव गोकर्ण महाबळेश्वर, कर्नाटक से हैं। |
| ९ | ज्ञान और हुनर / कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतरसंबंध हैं? | लोगोंकी ईश्वरमें श्रध्दा कालातीत है। विज्ञानयुग में भी मानव के आंतरिक शांती के पूजा पाठ आवश्यक है और लोगोंकी आजभी पूजापाठ में श्रध्दा है। इसके अलावा वेदोंमे जो ज्ञानभंडार है उसका संशोधन भी जरुरी है। |
| १० | आज वर्तमान में संबंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता है? | इससे संबंधित समुदाय को रोजगार मिलेगा |
| ११ | क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित आंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहूँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों. क्या प्रस्तावित योजना के तावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुडे समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो? विवाद खडा करती हो? | कोई विवाद खडा नही करती मानवाधिकार तत्त्वों का उल्लंघन नहीं होता |
| १२ | प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परंपरा की योजना क्या उससे संबंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है? | हां |

| | | |
|---|---|---|
| १३ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्वों के संरक्षण के लिए उठाए जानेवाले उपायों / कदमों / प्रयासों के बारे में जानकारी जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं? उल्लेखित उपाय/उपयों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में संबंधित समुदायों, समूहों और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है। | — — — |
| | १) औपचारिक एवं अनोपचारिक तरीके से प्रशिक्षण (संचरण)<br>२) पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध | प्रशिक्षण<br>रक्षण एवं संरक्षण |
| | ३) रक्षण एवं संरक्षण | |
| | ४) संवर्धन एवं बढावा | |
| | ५) पुनरुद्धार / पुनर्जीवन | |
| १४ | स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये? उनका विवरण दें। | शासन या अधिकारीद्वारा इस परंपरा के संरक्षण के लिए कोई ठोस उपाय नहीं हैं। ब्राह्मण समुदाय लोकाश्रय की सहायता से इसका जतन कर रहा है |
| १५ | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और संबंधित कारणों का ब्योरा दे। | वेद भारत के ही नही बल्की समूचे विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। लेखनकला, मुद्रणकला के बगैर कुछ हजार सालोंसे इतना जतन किया गया है। इस प्राचीन परंपरा को अगले पिढी को सौंपना हमारा कर्तव्य है। |
| १६ | संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं? (इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परंपरा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढावा मिल सके। ये उपाय ठोस हो जिसे भविष्य कीसांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके।) | वेदपढाई के लिए पाठशाला खोले, जिन पाठशालाओं में यह कार्य जारी है उनको शासकीय सहायता दें। |
| १७ | सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/ परंपरा के तत्त्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखे) | आज सामुदायिक सहभागितासेही यह कार्य चल रहा है। लोगों से सहायता लेकर वेदपाठशालाएं चलती है। |

| | | |
|---|---|---|
| १८ | संबंधित समुदाय के संघठन (नों) या प्रतिनिधी (यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्त्वों से जुडें हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधी या अन्य गैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाईजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार, समिती, स्टीयरिंग समिती आदि) | – |
| | १) संस्था/कंपनी/हस्ती का नाम | |
| | २) संबंधित / अधिकारी व्यक्ति मा नाम पदनाम व संपर्क | |
| | ३) पता | |
| | ४) फोन नंबर | मोबाईल नं |
| | ५) ईमेल | |
| | ६) अन्य संबंधित जानकारी | |
| १९ | किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय / राजकीय / राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें। | महर्षि सांदीपनी राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, मध्यप्रदेश |
| २० | के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज (किताब, लेख, ऑडिओ–विज्युअल सामग्री, लाईब्रेरी, म्यूजियम, प्राईवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों / व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाईट आदि जो संबंधित सांस्कृतिक विरासत/परंपरा के तत्त्वों के बारे में हो) | वेदोंके बारे में अनेक ग्रंथ प्रकाशित हैं। |

हस्ताक्षर

नाम व पदनाम : महेश गंगाधर जोशी,
अथर्व वेद अध्यापक
पता : मु. पो. हाळी, ता. उदगीर, जि. लातूर
मोबा: ०९७६४०४६७८९
ईमेल : maheshgjoshi25@gmail.com

अयर्ववेद उपग्रंथ अध्ययन करते समय
वे.मु.महेश जोशी और उनके छात्र

नित्यकर्म अध्ययन करते समय
वे.मु.महेश जोशी और उनके नऐ छात्र